आचार्य जिनसेन (द्वितीय)

जीवन-परिचय : आचार्य जिनसेन द्वितीय आचार्य वीरसेन के प्रमुख शिष्य थे। वे विशाल बुद्धि के धारक, कवि, विद्वान और वाग्मी (वाक्पटु) थे। इसीलिए आचार्य गुणभद्र ने लिखा है कि—जिस प्रकार हिमाचल से गंगा का, सर्वज्ञ से दिव्य ध्वनि का और उदयाचल से भास्कर का उदय होता है, उसी प्रकार वीरसेन से जिनसेन का उदय हुआ है। वे तप और गुण में श्रेष्ठ, बड़े साहसी, गुरुभक्त और विनयी थे। बाल्यावस्था से ही जीवन पर्यन्त अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत के धारक थे। उनके जीवन में स्वाभाविक मृदुता और सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता थी। बाल्यावस्था से ही उन्होंने ज्ञान की सतत आराधना में जीवन बिताया था। वे उच्चकोटि के कवि भी थे।

वास्तव में वीरसेन, जिनसेन और गुणभद्र—इन तीनों आचार्यों का साहित्यिक व्यक्तित्व अत्यन्त महनीय है और तीनों एक-दूसरे के अनुपूरक हैं। आचार्य वीरसेन के अपूर्ण कार्य को जिनसेन ने पूर्ण किया है और जिनसेन के अपूर्ण कार्य को आचार्य गुणभद्र ने पूर्ण किया है। हरिवंशपुराण की रचना शक संवत् 705 (ई. सन् 783) में पूर्ण हुई है, अत: जिनसेन स्वामी का समय ई. सन् की आठवीं शती का उत्तरार्द्ध है।

रचना-परिचय : जिनसेनाचार्य काव्य, व्याकरण, नाटक, दर्शन, अलंकार, आचार, कर्मसिद्धान्त आदि अनेक विषयों के बहुज्ञ विद्वान थे। इनकी तीन रचनाएँ उपलब्ध हैं:

1. **पार्श्वाभ्युदय :** यह अपने ढंग का एक अद्वितीय समस्या पूर्ति खण्डकाव्य है। दीक्षाधारण करने के पश्चात् भगवान पार्श्वनाथ प्रतिमायोग में विराजमान हैं, पूर्वभव का बैरी कमठ का जीव शंवर नाम का ज्योतिष्क देव अवधिज्ञान से अपने शत्रु पर अनेक प्रकार का उपसर्ग करता है। परन्तु पार्श्वनाथ अपने ध्यान से रंचमात्र भी विचलित नहीं होते हैं। धरणेन्द्र और पद्मावती उपसर्ग दूर कर देते हैं, और

पार्श्वनाथ को केवलज्ञान हो जाता है।

साहित्यिक दृष्टि से यह काव्य बहुत ही सुन्दर और काव्य गुणों से मंडित है। इसमें चार सर्ग हैं। काव्य में कुल मिलाकर 364 मन्दाक्रान्ता पद्य हैं।

2. **आदिपुराण :** आचार्य जिनसेन ने त्रेसठ शलाका पुरुषों के चरित्र लिखने की इच्छा से 'महापुराण' का प्रारम्भ किया था, किन्तु बीच में ही स्वर्गवास हो जाने के कारण उनकी यह अभिलाषा पूरी नहीं हो सकी। और महापुराण अधूरा ही रह गया, जिसे उनके शिष्य गुणभद्र ने पूरा किया। आदिपुराण में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का चरित वर्णित है। आदिपुराण में 47 पर्व और बारह हजार श्लोक हैं।

3. **जयधवला टीका :** कषायपाहुड के प्रथम स्कन्ध पर जयधवला नाम की बीस हजार श्लोक प्रमाण टीका लिखने के बाद आचार्य वीरसेन का स्वर्गवास हो गया, अत: उनके शिष्य जिनसेन ने अवशिष्ट भाग पर चालीस हजार श्लोक प्रमाण टीका लिखकर उसे पूर्ण किया।